प्रेरणा गुप्ता

ई-मेल-prernaomm@gmail.com

बेताल के आँसू

विक्रम भी कुछ कम नहीं था। पीछा करते हुए फिर से पेड़ के नीचे जा पहुँचा और पेड़ पर चढ़, शव को कंधे पर लादकर नीचे उतर आया तथा तान्त्रिक के यज्ञ-स्थल की ओर चलने लगा।

उफ्फ!

विक्रम अभी कुछ ही कदम चला था कि कंधे पर लदा बेताल उसकी थकान महसूस कर फिर चालू हो गया।

"हाँ, तो सुनो राजन! आज एक नयी कहानी :

एक आदमी था, जंगल-जंगल हरियाली के बीच घूमा करता था। कभी नदी के तट पर बैठा दिखाई पड़ता तो कभी पहाड़ों पर चढ़कर सूरज-चाँद-सितारों को निहारता। यही नहीं, सरसराती हवाओं से न जाने क्या गुफ्तगू किया करता था?

लोग उसे 'बावला' कहने लगे थे।

एक दिन कुछ लोगों ने कौतूहलवश उसे रोककर पूछा, "क्यों भाई! तुम इन पेड़-पौधों, बादलों वगैरह में क्या देखा करते हो?"

उसने मुस्कुराकर कहा, "प्रेम।"

"प्रेम?" सभी ठठाकर हँस पड़े, "लगता है तुम्हें किसी से प्रेम नहीं हुआ या फिर किसी ने तुमसे प्रेम किया ही नहीं। माता-पिता ने तो किया होगा ...?"

उसने निर्विकार भाव से जवाब दिया, "उनके लिए तो मैं मात्र खिलौना था।"

"मित्रों ने?"

"उनके लिए, समय व्यतीत का साधन।"

"फिर, पत्नी ने तो जरूर ही किया होगा।"

"नहीं, वो प्रेम नहीं वासना थी।"

"अरे भई, किसी से तो हुआ ही होगा, भाई-बहन या फिर बच्चों से ...।"

"ना-ना, भाई-बहन के बीच लालसा थी और बच्चों के संग स्वार्थ।"

"ओह! बेचारा।"

इस सहानुभूति का उसने कोई जवाब नहीं दिया, निर्विकार भाव से आगे बढ़ चला।

"अच्छा, तो अब यह बताओ राजन, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि इस सृष्टि की उत्पत्ति प्रेम से हुई है, फिर उस आदमी को किसी भी इंसान से प्रेम क्यों न हुआ?"

उसने गूढ़ निगाहों से बेताल की आँखों में झाँका।

"अरे! तुम तो बड़े वीर-पराक्रमी, अपने घर के राजा हो। जानते-बूझते जवाब नहीं दोगे तो, तुम्हारे सिर के टुकड़े-टुकड़े ...।"

"फूल-पत्ते, हवा, बादल और नदियाँ वगैरह तो प्रकृति के नियमों से बँधकर बिना किसी शर्त के हर किसी से प्रेम करने को बाध्य हैं; लेकिन इंसान, बौद्धिक स्तर ऊँचा होते हुए भी वह इच्छाओं के वशीभूत, प्रेम का व्यापार करने में लग पड़ा है।" विक्रम ने कहा।

बेताल हतप्रभ हो उसे देखता रह गया। एकाएक उसकी आँखों से आँसू छलक पड़े। वह उदास आवाज में बोला, "ठीक कहा राजन! प्रेम व्यापार न बना होता और विश्वास हत्यारों के हत्थे न लगता तो बेमौत मारा जाकर मैं बेताल न बनता और तुम भी... ! बहरहाल, तुम्हारा मौन टूट गया, मैं चला।" और हवा में छूमंतर हो गया।